शोध पत्र- हिन्दी

शेखावाटी क्षेत्र का लोक काव्य

* डॉ. सुनीता कुमारी

*21- ए, कृष्णा नगर, वैशाली नगर, जयपुर।

February, 2011

शब्द और अर्थ को काव्य का शरीर कहा गया हैं शब्द के साथ अर्थ का लगाव है और अर्थ के साथ शब्द का, इस लिए दोनों मिलकर ही काव्य का शरीररत्व सम्पादित करते है।भारतीय समीक्षा के क्षेत्र में लक्षण या परिभाषा का प्रश्न काव्य की आत्मा के सम्बन्ध में उठाया गया है, आत्मा ही सार वस्तु है काव्य के दो पक्ष एक भाव पक्ष और दूसरा अभिव्यक्ति या कला पक्ष। दोनों एक दूसरे से सम्बन्धित है। 'आचार्य भरत मुनि' ने भी नाटकों के सम्बन्ध में काव्य की विवेचना की रस और भावों को ही मुख्यता दी है। काव्य का मूल तत्व तो रागात्मक या भाव तत्व है, किन्तु उसके साथ पाश्चात्य देशों में कल्पना तत्व, बुद्धि तत्व और शैली तत्व को भी माना है। 'कठोप निशद' में बुद्धि को इंद्रिय रूपी अश्वों की लगाम कहा, वह इन्द्रियों को लगाम नहीं है वह कल्पना के घोड़ो की भी लगाम है।

'मम्मटाचार्य' ने दोषरहित गुणवाली और कभी अनलड़्कृत भी, शब्द और अर्थमयी रचना को काव्य कहा है। इस परिभाषा में गुणों के भाव और दोशों के अभाव को मुख्यता दी गई है।

आचार्य विश्वनाथ–'ऐके साधे सब सधे' के नियम का अनुसरण करते हुए काव्य की परिभाषा इस प्रकार की है। वाक्य रसात्मक काव्यम अर्थात रसयुक्त वाक्य काव्य है। जहाँ दण्डी, मम्मटादि ने पतों और शाखाओं को सीचने की और तुलसीदास जी ने शब्दों में 'बरी–बरी में लोन' देने की कोशिश की है। वहाँ विश्वनाथ ने जड़ को सींचा है। गुण अलड़ाकरादि सभी रस के पोषक हैं वाक्य शब्द में अर्थ को भी शामिल किया जाता है क्योंकि सार्थक शब्द ही वाक्या बन सकता है।

शेक्सपीयर ने 'कल्पना' को प्रधानता देते हुए लिखा है कि कवि की कल्पना अज्ञात वस्तुओं को रूप देती है। वर्डस्वर्थ ने 'भाव' को प्रधानता देते हुऐ लिखा है कि काव्य शान्ति के समय में स्मरण किये हुए प्रबल मनोभावों –वेगों का स्वच्छन्द प्रवाह है।आ. द्विवेदी और रामचन्द्रशुक्लाजी नें कविता क्या है में बहुत कुछ लिख है आचार्य द्विवेदी ने भी 'काव्य और कविता' शीर्षक में काव्य की सुन्दर व्याख्या की है।शुक्ल जी 'जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है। उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी युक्ति की साधना के लिऐ मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती है उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं। जिस प्रकार शब्द की सार्थकता वायु के कम्पनों में नही है वरन् कहने और सुनने वाले के साम्य में है, उसी प्रकार काव्य की सार्थकता कवि और पाठक के भावसाम्य में है। इसी प्रकार से शेखावाटी के क्षेत्र में लोक–काव्य का गीतों के, कथावां के, लाकोक्तियों के माध्यम से सहज वर्णन किया गया है। कन्हियालाल सहल ने 'राजस्थानी कहावतें' में कहावतों के माध्यम से शेखावाटी लोककाव्य का मार्मिक वर्णन किया गया है। रावत सारस्वत ने 'राजस्थानी लोकगीत' के माध्यम से शेखवाटी लोक काव्य का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। शेखावाटी के लोक काव्य में यहाँ के परिवेश, समाज, स्वप्न, कल्पना, गीत और संगीत का मिश्रण है। यहाँ के लोक गीतों के माध्यम से यहाँ का रहन–सहन, खान–पान, पर्व, त्यौहार, स्त्री श्रृगांर आदि का वर्णन मिलता है। शेखावाटी क्षेत्र का परिवेश भी अपनी अलग से पहचान रखता है यहां का लोकजीवन परिस्थितियों का अनुसरण करने वाला रहा है।

शेखावाटी क्षेत्र मरू प्रदेश का हिस्सा है। अतः यहाँ हमेशा वर्षा का अभाव रहा है, यहाँ के लोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति इन्ही परिस्थितियों के अनुसार करते रहे है। इस क्षेत्र में गर्मी में **अधिकतम** गर्मी और सर्दी में अधिकतम सर्दी पड़ती है। गर्मी में इस क्षेत्र के लोग इस तरह की चीजों का अधिक प्रयोग करते है, जो लू से बचने में सहायक हों। अतः इस क्षेत्र के खान–पान में बाजरे, मोठ आदि से बने भोजन का ही उपयोग होता रहा है, क्योंकि यह खाद्य सामग्री यहाँ आसानी से उपलब्ध है।शेखावाटी क्षेत्र के लोक–गीत यहाँ के लोक–साहित्य जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति हैं। इन गीतों में लोक मानव की भावनाऐं हर्ष–उल्लास, शोक–विशाद, प्रेम–ईर्श्या, भय–आंशका, घृणा–ग्लानि, आश्चर्य, भक्ति, निवृति आदि सभी भाव बहुत ही सरल और शुद्ध रूप से व्यक्त किये गये है। लोकगीतों का क्षेत्र बहुत व्यापक है, यहा के लोकगीत पुत्र जन्म की लोरियां, यौवन–अवस्था के उन्माद और वृद्धावस्था की थकान को दूर करने वाले रहे हैं। यहां के लोक गीत लोक संस्कृति के प्रतिनिधि हैं। लोक गीतों की प्राचीनता होते हुऐ भी सदैव नूतन महसूस होते हैं। लोकगीतों में कभी भी नीरसता का भाव नहीं होता है। लोकगीत लोक की आत्मा है, लोक गीतों का प्रार्दुभाव सदैव हृदय से होता है, मन को छूने वाला होता है, सुख के गीत सदैव उमंग पैदा करते है, तो दुःख के गीत आँसुओं के साथी बनते हैं। लोक गीतों की रचना करने वाले कोई कवि नहीं हैं, वरन इनकी रचना गुमनाम है। इनकी रचना तो सम्पूर्ण लोक मानव द्वारा ही की गई है। खेत में काम करने वाले पुरूष और गृह कार्य करती हुई नारी द्वारा इनकी रचना की गई है। उनके हृदय के उदगार ही लोक गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किये गये है।लोकगीतों के माध्यम से ही शेखवाटी के लोक–संस्कारों को उजागर किया गया है, यदि

लोक–गीत नहीं होते तो लोकमानव दुःखी और निराशामय होता, परन्तु यह लोकगीत विशाद को मिटाने और शोक को समेटने वाले उपदेश का कार्य करते है। लोकगीतों के माध्यम से लोकजीवन किसी भी क्षण थकान महसूस नहीं करता है। श्रम सम्बन्धी गीत इतने प्रेरक है कि थका हुआ व्यक्ति भी इनको गाकर अपनी थकान दूर कर लेता हैं। शेखावाटी क्षेत्र के लोकगीतों में लय की प्रधानता है। गीतों के साथ संगीत जुड़ा हुआ है। कुछ गीतों के बोल इतने महत्वपूर्ण नहीं है, फिर भी इनकी धुन मानव मन में उमंग जगा देती है।लोक गीत आपसी सम्बन्धों को सदैव मधुर बनाने में सहयोग करते रहे है,अधिकतर गीत सामुहिक गाये जाते है। अतः इनके माध्यम से समाज में सहयोग की भावना बढती है। मानसिक तनाव को दूर करते है। अतः लोकगीतों की वर्तमान परिपेक्ष में बहुत आवश्यकता है।

शेखावाटी के नारी पुरूष समुदाय के गीतों के बारे में डॉ0 स्वर्णलता अग्रवाल ने लोक साहित्य में सुन्दर ढंग से लिखा है कि ''नारी और पुरूष समुदाय द्वारा जो अवर्णनीय संगीतमय प्रवाह उनके आयोजन में दृष्टिगोचर होता है, संगीत के स्वरों के साथ नृत्य के लय और ताल में जो समानता और उतार चढाव प्रस्तुत किया जाता है, उनका वर्णन शब्दों में करना सम्भव नहीं । उनके संगीत का आनंद तो देख सुनकर ही लिया जाता है। धीरे–2 उठते हुऐ गीत के स्वर द्रुत होने लगते है और उन्ही के साथ तेज होती जाती है, पैरों की थिरकन और संगत करने वाले साजों की आवाज।'' अतः हम कह सकते है कि संगीत मनुष्य के मन को आनंदित कर देता है और उस आनन्द की शब्दों में व्याख्या नहीं की जा सकती हैं। पणिहारी कुरजां, ओलूं, सपनौ ऐसे संगीतात्मक काव्यपूर्ण गीत है, जो मन के कोमल भावों को अभिव्यक्त करते है। ये गीत काव्य और संगीत के मिलन से प्रतीत होते हैं।शेखावाटी क्षेत्र में प्रत्येक मांगलिक अवसर पर बधावा अनिवार्यतः गाया जाता है। इसमें सुखी तथा समृद्ध गृहस्थ जीवन की झांकी मिलती है। यहाँ पुत्री को ससुराल विदा करते समय महिलाओं द्वारा सामूहिक बघावा गीत गाया जाता है।

बेबे आज बघावा म्हारी बाई को,
बेबे सेवा ए बघाओं सासु सुसर को।
बीस वर्ष लग पाल्यों ऐं सखी,
आज बाधाओं म्हारी बाई को।

इसमें बीस वर्ष तक (पाल पोष) पालन पोषण का यथार्थ वर्णन किया गया है। इस गीत में महिलाएं समस्त परिवार संबंन्धियों की उमंगता का संबोधन करती है। इस लोकगीत के माध्यम से पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की स्पष्ट झांकी मिलती है। नारी की समाज के सम्बन्ध में निकटता की अभिव्यक्ति होती है। स्वप्न गीत शेखावाटी का विचित्रता लिये हुऐ है–

सूती धण नखभर नींद
सूपने में बांटी घूघरी जी म्हारा राज।
थे तो धण असल गँवार, बिना जाय क्या कि बांटी घूघरी।
लाग्यो घण न पहला दूजा मास, थूक तलाया जीव जाय।
लाग्यो द्यण न नवीं मास होलर न शब्द सुणाय।

स्वप्न में एक ग्रामीण औरत स्वयं की कथा बताती है, कि हे प्रियतम मैंने रात्री स्वप्न में शुभ कार्यों के संकेत में घुघरी का वितरण किया था। जो शेखावाटी क्षेत्र में बच्चे की बधाई (खुशी) में बाँटीं जाती है। ये जन्म की प्रकियाएं स्वप्न में देखती है जो वास्तविकता में बदल जाती है। यह कल्पना उस औरत कि है जो बच्चे की मन में तमन्ना रखती है। स्वप्न एक मात्र कल्पना है, जो अर्द्ध निद्रा की अवस्था में मनुष्य महसूस करता है। कुछ वास्तविकता से जुड़ा भी होता हैं।'सपनौ' लोकगीत शेखावाटी क्षेत्र में काफी प्रचलित हैं, जिसमें एक प्रिया का प्रियतम परदेश में है। वह उसे स्वप्न में देखती हैं, उसका यथार्थ वर्णन इस गीत में है

गोरी–सुती थी रगं म्हैल मैं,
सुती नें आयौ रे जंजाल,
भंवर सपनै मै बतलाया जी,
गैहरी उठिया नींद स्यूं,
देख्या निजर पसार,
मारूजी री सेजां सूनी दीखी जी।
टग टग म्हैला ऊतरी ,
गई गई सासूजी के पास,
सासूजी थारै जायै नै देख्याजी सासूजी–गैली भवुऊ तू है बावली,
तू है हिदक गंवार।

इसमें पत्नी पति के वियोग की स्थिति की कल्पना करती है। रंग मंहल में सोने के बाद स्वप्न में परदेसी पति आये हुऐ दिखते है, तभी गौरी यह स्वप्न सासुजी को सुनाती है। इसमें परिवार के आत्मीय भाव दिखाई देता है। स्वप्न की घटनाऐं हमारे जीवन से जुड़ी घटनाओं से ही संबंधित होती है।यहाँ के लोग काव्य में पशु पक्षियों से वार्तालाप, उनके साथ संदेश भेजना, उनसे अपनी व्यथा सुनाना आदि सभी कल्पनाएं है। यहाँ के सावन मास में गाया जाने वाला 'पपीहा' और 'मोरिया' गीत में बहिन–भाई के आने की कल्पना करती हैं और कहती है कि मेरे भैया मुझे लेने अवश्य आयेंगे। शेखावाटी क्षेत्र में संयोग–वियोग के गीतों में स्त्री बहुत तरह की कल्पना करती है। परदेस पति की स्थिति की कल्पना अपने मनोभावों में व्यक्त करती है। यहॉ के वैवाहिक गीतों में लड़की की तरफ गाये जाने वाले 'बनी' गीतों में वर के सुन्दर, सुशील और बहुत पैसे वाला होने की कल्पना की गई है। वह लड़की के बहुत (लाड़) प्यार करेगा, इस तरह की कल्पना इन गीतों में मिलती है। इसी प्रकार वधु की सुन्दरता का वर्णन भी यहाँ के 'बनड़े' गीतों में किया गया है। गणगौर पूजन के समय शेखावाटी की कन्याएं गीत गाकर ईसर गोरी से अराधना, वर देने की प्रार्थना करती है। जिसमें कल्पना का भाव मुखातिर होता है जैसे–मैडी बैठ्यों मद पीवे लीली के रौ अस्वार।

कड़ मोड़े घोड़े चढे ए चाल निरखतो जाय।
ओर वर दीये माता गोरलु ए म्है थां ने पूजण आय।।

रानी लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत ने अपनी रचना''सास्कृतिक राजस्थान'' में प्रदेशी प्रियतम की सुन्दर कल्पना की है–

घरै आवों नी पधारो नीं।
म्हारा दिसडी़ रा दिवाला
थांरा मारगिया बूवारूं

बजूबंद री लूंब से इस सुहावने मार्ग को बुहारूगीं जिससे होकर तुम आओंगे। लोक गीतों में संगीत का महत्वपर्ण स्थान हैं, इनमें संगीत की प्रधानता को सभी स्वीकार करते हैं। लोक–गीत के स्वर हृदय में आनंद या वेदना का संचार करते है, तो काव्य की अपेक्षा गीत का संगीत पक्ष ही हमारी आत्मा के तार हिला देता है।शेखावाटी के लोक संगीत शास्त्रीय संगीत की कृत्रिमता से बंधा हुआ नहीं है, यह तो स्वभाविक रूप से पैदा होता है। ग्रामीण समाज की महिलाएं किसी भी वा़द्य का प्रयोग नहीं करती है, बल्कि उनकी लय और स्वर ही स्वाभाविक होते है और उन्ही से संगीत की महता बनती है। लोक संगीत में धुन के साथ ही लय और ताल स्वभाविक रूप से विकसित होती है।

डॉ0 योजना शर्मा ने ''राजस्थानी लोक गीतों की संरचना'' में लोक गीतों के बारे में रामनरेश त्रिपाठी के अपने विचारों को इस प्रकार प्रकट किया है::–

इनके हद नहीं केवल लय हैं।'' लोक संगीत, लोक गींत के साथ स्वतः ही निर्मित होता है और यह संगीत लोक गीतों के साथ स्वतः ही निर्मित होता है यह संगीत सरल भी होता है। लोक संगीत में राग– रागनियां, ताल, धुनें सभी व़िद्यमान रहती है। लोक गीतों के स्वर और लय ही लोक संगीत का रूप प्रदान करते है। इनके स्वर और लय के निर्माण में किसी वाद्ययंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता है। ग्रामीण महिलाएं लोकगीतों को विभिन्न धुनों, तर्जो में गाती है। यह विभिन्न धुंने ही संगीत की दृष्टि से लोक गीतों में महत्वपूर्ण होती है। लोक गीतों में शब्द और धुन कोअधिक महत्व दिया गया है, इनमें ताल को इतना महत्व नहीं दिया गया है। लोक संगीत में बिना वाद्य यन्त्रों के भी ताल और लय विद्यमान रहती है। लोक संगीत, लोकगीत को गाने और लोक प्रिय बनाने का प्रधान साधन है। विभिन्न प्रकार के लोक गीतों को अपनी एक निश्चित लय होती है और वे उसी लय में गाये जाते है। शेखावाटी क्षेत्र की लोक गथाएं भी गेय होती हैं, इस लिऐ उनका छन्द विद्यान भी संगीत प्रधान होता है। संगीत में भी लय की प्रधानता पायी जाती हैं। संगीत के कारण ही लोक गाथाओं की रोचकता बनी रहती है। उनके गायक संगीत की लय और धुन के निर्माण में पारंगत होते है। शेखावाटी के ख्यालो में मुख्य मुख्य रागें अग्रलिखित है–

भैरवी, वृन्दावन, सांरब, मारक, आसावरी, काफी, मांड, पीलू, खमाच आदि। सभी ख्याल शास्त्रीय राग रागनियों पर आधारित होते है। लोक नाट्य भी कुछ हद तक गेय होती है। अतः इनमें भी संगीत की प्रधानता है। संगीत ही इनमें मनोरंजकता पैदा करता है। लोक नाट्य में संगीत झोपड़ी से लेकर महलों में रहने वालों को आकर्षित करता है। लोकगीत, लोकनाट्य आदि के माध्यम से आज भी जन–जागृति की जाती है। ढोला मारू आदि दोहे 'उच्चा मगरू जाऊ ऐ माँ' ऐसे भाव मानव को उद्वेलित करते है मन के भाव जागृत करते है। शेखावाटी गीत, संगीत कभी भी पुराने नहीं होते है। आज भी आगे बढने का रास्ता दिखाते है। शेखावाटी का लोक साहित्य समाज की मूल प्रवृतियों की अभिव्यक्ति है। समाज प्रकृति से जुड़ा हुआ है। जो साधारण जीवन–यापन करता है। लोक साहित्य के माध्यम से ही यह वर्ग अपने मन की अभिव्यक्ति करता है। इस वर्ग में अपने भावों को व्यक्त करने में कृत्रिमता का प्रयोग नहीं होंता है, वरन अपनी अभिव्यक्ति सहज और सरल भाषा में व्यक्त करता है। शेखावाटी का लोक काव्य सदैव हृदय से उठता है और हृदय पर ही चोट करता है। अर्थात यह बहुत ही मार्मिक होता है, इसका सम्प्रेषण ही बहुत आसान है क्योंकि लोककाव्य हम मौखिक रूप से ही ज्ञात रखते है। यह लिखित नहीं है अतः इसका प्रवाह पीढी दर पीढी मौखिक रूप से ही परम्परागत रूप से चला आ रहा है। समाज का यह वर्ग इसकी परम्पराओं को परिवर्तित नहीं करना चाहता है, फिर भी मौखिक रूप से होने के कारण कुछ परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। लोककाव्य शेखावाटी संस्कृति और जन जीवन की अमूल्य सम्पति है यद्यपि आज नगरीय सभ्यता का प्रचार–प्रसार हो रहा है, फिर भी मानवीय मनोभावों का सुन्दर उद्बोधन केवल लोकगीतों द्वारा ही सम्भव है, इसलिए अभी तक जो लोकगीत केवल कण्ठ परम्परा से जीवित रहे, उन्हे आज लिपिबद्ध करके विश्लेषित करने की भरपूर आवश्यकता हैं।

संदर्भ ग्रंथ

खण्ड –1 सहायक पुस्त सूची क्रम सं. पुस्तक 1. राजस्थापन के लोक गीत–डॉ. रामसिंह, श्री नरोतमदास 2. राजस्थानी लोकगीत भाग 1–स्व. श्री सूर्यकरण परीक 3.मारवाड़ी स्त्री गीत संग्रह–श्री ताराचन्द्र ओझा 4. मारवाड़ के ग्राम गीत –श्री जगदीश सिंह गहलोत 5. पुस्करणों के सामाजिक गीत–श्री जगदीश सिंह गहलोत 6. राजस्थानी संगीत भाग 1–2 –श्री रागमल गोपा 7. मारवाड़ी गती संग्रह 6 भाग–श्रीमती विधाधरी देवी 8. मारवाड़ी गती संग्रह 5 भाग–श्री खेतराम माली 9. राजस्थान के वीर गीत–अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर द्वारा प्रकाशित 10. मारवाड़ी गीत–श्री निहालचन्द्र वर्मा 11. राजस्थानी वीर गायन–हाड़ोती शिक्षा मंडल कोटा से प्रकाशित 12. सुधार संगीत–श्री अगरचन्द्र नाहटा 13. मारवाड़ी भजन सागर राजस्थान रिसर्च सोसायटी खण्ड – 2 राजस्थानी लोकगीतों के हस्तलिखित संग्रह क्रं. सं. संग्राहक व उपलब्धिस्थान 1. श्री सीताराम लालस द्वारा संगृहीत राजस्थान रिसर्च इन्स्टीटयूट, बीकानेर में 2. श्री गणपति स्वामी द्वारा संग्रहीत , बिड़ला सेन्ट्रल लायब्रेरी, पिलानी में। खण्ड –3 भारतीय लोकगीतों के संग्रह 1. बेला फले आची रात–श्री देवेन्द्र सत्यार्थी 2. बाजत आवे ठोल–श्री देवेन्द्र सत्यार्थी 3. राजस्थानी लोकगीत–श्री पुरूषोत्तम मेनारिया 4. हिन्दी लोकगीत–श्री रामकिशन साहित्य भवन5. राजस्थान की रस धारा –श्री पुरषोत्तम मेनारिया